Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VI, Issue No. XII, October-2013, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

मुगल साम्राज्य और प्राकृतिक आपदाएं

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VI, Issue No. XII, October-2013, ISSN 2230-7540

मुगल साम्राज्य और प्राकृतिक आपदाएं

Paramjeet Kaur[1] Dr. Anil Sharma[2]

[1]Research Scholar (History) Singhania University, Rajasthan

[2]Prof. History-Department, Geeta College of Education, Jind

----------X----------

प्राकृतिक आपदाओं की उत्पत्ति प्राकृतिक प्राक्रमों में परिवर्तन से होती है, जिसका प्रभाव प्राकृतिक पर्यावरण एवं मानव की गतिविधियों पर विपरीत रूप से पड़ता है। प्राकृतिक कारकों में परिवर्तन से उत्पन्न घटनाएँ जब मानव एवं मानव से सम्बन्धित गतिविधियों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले तो उन्हें प्राकृतिक आपदा कहते हैं। 17वीं व 18वीं सदी के भारतीय फारसी साहित्य से ज्ञात होता है कि –अनावृष्टि, अतिवृष्टि, ओलावृष्टि, आगजनी, भूकम्प, चक्रवात, महामारी तथा चूहे व टिड्डी आक्रमण आदि प्राकृतिक आपदा के रूप में सामान्य जन–जीवन पर प्रायः दूरगामी व गहन प्रभाव डालने वाले होते थे। अध्ययन काल के समय प्राकृतिक आपदा के घटित होने के सम्बन्ध में सामान्यतः लोगों की मान्यता थी कि धार्मिक अवहेलना व खगोल विद्या में निर्धारित कारण प्राकृतिक आपदाओं के लिए उत्तरदायी थे।

प्राकृतिक आपदाओं का क्रम, मुगल काल में जारी था। समकालीन इतिहासकार अबुल फजल व अब्दुल कादिर बंदायूनी से ज्ञात होता है कि अकबर के शासन काल में वर्ष 1556, 1570 व 1594–95 में अजमेर, दिल्ली, सिंध, आगरा व गुजरात में अनावृष्टि व प्लेग का प्रकोप था तथा सन् 1582 व 1589 में बंगाल व मालवा सूबों में अतिवृष्टि से बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो गई थी। इन आपदाओं के दौरान हजारों की संख्या में मानव व पशुधन की हानि हुई जबकि इस समय के आर्थिक कार्य कलाप मानव व पशुधन की शक्ति व संख्या पर आश्रित थे, क्योंकि कृषि व गैर–कृषि कार्यों में मानव व पशुधन की मुख्य भूमिका होती थी। बंदायूनी से ज्ञात होता है कि प्राकृतिक आपदा के कारण सन् 1556 व 1595 में खाद्यान्न की कमी के कारण मानव भक्षण तक की घटनाएँ हो रही थीं। इससे तत्कालीन परिस्थितियों में प्राकृतिक आपदाओं के भयावह परिणामों का अंदाजा लगाया जा सकता है।

तुजुक–ए–जहांगीरी व मोतमदखाँ के इकबालनामा–ए–जहांगीरी से ज्ञात होता है कि सन् 1614 व 1616 में अजमेर, सिंध, दिल्ली व गुजरात में अनावृष्टि का प्रकोप था। कश्मीर व आगरा सूबे में सन् 1618 में प्लेग महामारी से अतिशय जन हानि हुई।

समकालीन इतिहासकार अब्दुल हामीद लाहौरी से ज्ञात होता है कि सन् 1630–31 में साम्राज्य का काफी क्षेत्र अनावृष्टि व महामारी से ग्रस्ति हो गया था। इस अकाल के दौरान अकेले अहमदनगर क्षेत्र के कोई दस लाख मनुष्य काल ग्रस्त हो गए थे। यह अकाल इतना गहन था कि 17वीं सदी के मध्य तक दक्षिण के मुगल सूबों का राजस्व इतना घट गया कि वहां के प्रशासनिक खर्च के लिए अपर्याप्त था। यूरोपियन यात्री वॉन टवीस्ट के वर्णन में उल्लेख मिलते हैं कि गुजरात व दक्कन सूबे वीरान हो चुके थे तथा मानव भक्षण जैसी घटनाएँ भी हो रही थी। पीटर मुण्डी से ज्ञात होता है कि सूरत शहर में इस आपदा से 80 हजार लोग मारे गए थे। इंगलिश फैक्ट्री रिकार्ड से उल्लेख मिलते हैं कि सन् 1670–71 में बिहार, सन् 1647 में गुजरात, आगरा, अजमेर, सिंध व दक्कनी सूबे अनावृष्टि से तथा सन् 1650 में मुल्तान सूबा में टिड्डियों के प्रकोप से कृषि उत्पादन कम हुआ।

समकालीन इतिहासकार मुहम्मद खांफी खां से ज्ञात होता है कि सन् 1658 में अजमेर, गुजरात, दिल्ली, सिंध व आगरा जहाँ अनावृष्टि से भयावह दशा थी वहीं उत्तराधिकार के युद्ध ने इसको ओर दुर्गम बना दिया। इतिहासकार भीमसेन व जैन लेखक यति जयचंद के उल्लेखों से ज्ञात होता है कि सन् 1676 में अजमेर, सन् 1695 में सिंध, अजमेर, दिल्ली, गुजरात व सन् 1703 तथा 1711 में अजमेर में अनावृष्टि के दुष्प्रभाव से सामान्य जनजीवन अस्त–व्यस्त हो गया। इन प्राकृतिक आपदाओं का मुगल साम्राज्य की कृषि–व्यवस्था पर दुष्प्रभाव पड़ता था। जैसा कि इतिहासकार अबुल फजल से ज्ञात होता है कि सन् 1595 में दिल्ली व अजमेर से भू–राजस्व की प्राप्ति कम रही, का कारण कृषि उत्पादन में कमी थी। साथ ही कृषि उत्पादन की कमी के कारण खाद्यान्न की कीमतों में अत्यधिक वृद्धि हो जाती थी। यूरोपियन यात्री जॉन मार्शल के उल्लेख से ज्ञात होता है कि सामान्य समय में एक मन अनाज एक महमूदी में मिल जाता था जबकि सन् 1630–31की आपदा के कारण गुजरात में छः से सात महमूदी में एक मन अनाज मिल रहा था। इसी प्रकार जैन लेखक यति जयचंद के उल्लेख से ज्ञात होता है कि सन् 1660 में अजमेर सूबे में आठ रुपए में एक मन अनाज मिल रहा था, जबकि सामान्य समय में एक रुपये में एक से दो मन तक अनाज मिल जाता था।

इंगलिश फैक्ट्री रिकार्ड से ज्ञात होता है कि सन् 1630 व 1670 में अजमेर, सिंध, गुजरात व बिहार में व्यापार व उद्योग की दशा खराब थी जैसा कि गुजरात सूबे से आपदा से पहले 15 गांठे प्रतिदिन कपड़े की आ रही थी, जबकि आपदा के बाद एक महीने में 3 गाठों का उत्पादन हो रहा था। खाद्यान्न का व्यापार प्राकृतिक आपदा के दौरान सुरक्षा कारणों से बाधित हो जाता था। क्योंकि खाद्यान्न लूटने की घटनाएँ ऐसे समय में बढ़ जाती थी इन प्राकृतिक आपदाओं के कारण व्यापक स्तर पर जनहानि होती थी। जैसा कि यूरोपियन यात्री जॉन मार्शल के उल्लेख से ज्ञात होता है कि सन् 1670–71 में बिहार सूबे में अनावृष्टि व प्लेग महामारी के कारण 1.03 लाख लोग मारे गए। इतिहासकार अब्दुल हामीद लाहौरी से ज्ञात होता है कि सन् 1630–31 में

www.ignited.in

प्राकृतिक आपदा के कारण गुजरात व सिंध सूबों में 300 आदमी प्रतिदिन मर रहे थे। इन शवों की दुर्गंध फैलने से महामारी फैलने की सम्भावना बढ़ जाती थी। जैसा कि यूरोपियन यात्री वॉन टवीस्ट के उल्लेख में मिलता है।

प्राकृतिक आपदा से बचने के लिए मानव शीघ्र स्थान त्यागकर दूसरे स्थान पर चले जाते थे। सम्राट जहांगीर की तुजुक–ए–जहांगीर से उल्लेख मिलता है कि सन् 1616 की अनावृष्टि के कारण कश्मीर सूबे से 20–30 हजार लोग लाहौर सूबे में आ गये थे। इसी प्रकार टामस बोअरी से ज्ञात होता है कि सन् 1670–71 में बिहार सूबे से 50 लाख लोग बंगाल सूबे की ओर स्थानान्तरण कर गए थे। आत्महत्या, मानव का क्रय–विक्रय, धर्म परिवर्तन व अपराध की घटनाएँ भी प्राकृतिक आपदा के कारण होने लग जाती थी। समकालीन इतिहासकार बंदायूनी से ज्ञात होता है कि सन् 1560 व 1595 में अनावृष्टि के कारण लोग इतने व्याकुल हो गए कि वे यमुना नदी में कूदकर आत्महत्या का मार्ग अपनाने को बाध्य हो गये थे। अबुल–फजल से ज्ञात होता है कि सन् 1595 में पुर्तगाली फॉदर जौनियर ने नवइसाई धर्म के अनुयायियों के खाने की सामग्री बांटी। यूरोपियन यात्री जॉन मार्शल के उल्लेख से ज्ञात होता है कि सन् 1670–71 बिहार सूबे में मानव का दास के रूप में क्रय–विक्रय हो रहा था। इन प्राकृतिक आपदाओं के कारण मुगल प्रशासनिक व्यवस्था में भी अवरोध आता था। जैसा कि समकालीन अखबारात व सियाहा वकाए दरबार से ज्ञात होता है कि सन् 1670–71 व 1680 में बिहार, अजमेर, सिंध, लाहौर व दिल्ली में सूखा अकाल था, जिस कारण लोग चोरी व डकैती की प्रवृत्ति की ओर बढ़ जाते थे। जैन लेखक यति जयचंद के उल्लेख से ज्ञात होता है कि अजमेर सूबे में महाअकाल के दौरान खाद्यान्न चोरी की घटनाएँ होती थीं। यूरोपियन यात्री बर्नियर से ज्ञात होता है कि सन् 1630–31, 1694–95 की आपदा के समय यहाँ की सड़के असुरक्षित थी।

मुगल काल की प्रशासनिक व्यवस्था में भ्रष्टाचार व रिश्वतखोरी की घटनाएँ होने लग जाती थी। सियाहा अखबारात दरबार–ए–मुअल्ला से ज्ञात होता है कि सन् 1670 में बिहार व अजमेर सूबे के लिए दी गई राहत सामग्री भ्रष्ट व रिश्वतखोर कर्मचारियों द्वारा हड़प ली जाती थी। इतिहासकार अबुल फज़ल व मुहम्मद खांफी खां से भी ज्ञात होता है कि महामारी से अनेक सक्षम व योग्य व्यक्ति काल ग्रस्त हो जाते थे।

जहां तक राज्य द्वारा उठाये गये राहत उपक्रमों का संबंध है ऐसे अवसरों पर मुगल शासक साम्राज्य में शान्ति व सुरक्षा बनाए रखने के लिए यथा सम्भव कदम उठाते थे। लेकिन समकालीन स्त्रोतों से ज्ञात होता है कि मुगल काल में प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए राहत इतनी कारगर साबित नहीं होती थी। बारम्बार आपदाओं की घटनाओं को देखते ही मुगल शासकों ने पूर्व उपचार के उपायों का भी सहारा लिया। समकालीन इतिहासकार अबुल फज़ल व बंदायूनी से ज्ञात होता है कि अकबर ने यमुना नदी से नहरें निकलवाईं साथ ही सुल्तान फिरोज तुगलक द्वारा बनवाई गई नहरों की मुरम्मत करवाई जहांगीर ने अपने शासनकाल में लाहौर में एक नहर बनवाई तथा अजमेर में बड़ी झील का निर्माण करवाया। सियाहा वकाए व अखबारात से ज्ञात होता है कि सम्राट शाहजहां व औरंगजेब ने अनेक नहरों व बांधों का निर्माण करवाया–रावी नदी पर बांध बनवाया, पटाला परगना में नहर बनवाई और लाहौर नहर की मरम्मत करवाई।

मुहणोत नैणसी के उल्लेखों से ज्ञात होता है कि गाँवों में तालाब, बावड़ी तथा कुएँ निर्माण में स्थानीय शासक व बनिया महाजन वर्ग भी कार्यरत था। सम्राट औरंगजेब ने आमेर से रेवाड़ी के बीच कुएँ व तालाब की संख्या कम होने पर नए निर्माण के आदेश दिये। प्राकृतिक आपदा के समय पानी के साधनों का महत्त्व और भी बढ़ जाता था।

सम्राट अकबर से लेकर मुहम्मद शाह के काल तक चिकित्सालयों की संख्या में बराबर वृद्धि होती रही थी। अबुल फज़ल, मुहम्मद खांफी खां व यूरोपियन यात्रियों के उल्लेखों से ज्ञात होता है कि शाही सेवा के लिए श्रेष्ठ हकीम व वैद्य नियुक्त थे। जहांगीर ने दिल्ली व लाहौर में चिकित्सालयों का निर्माण करवाया। फिर भी ऐसे चिकित्सालयों की संख्या अपर्याप्त ही थी। सियाहा वकाए से ज्ञात होता है कि गांवों व दूर–दराज के क्षेत्रों में अच्छे हकीम व वैद्य नहीं थे। उदाहरण के लिए आमेर महाराजा का वकील उड़ीसा सूबे में था, तब महामारी से पीड़ित हो गया तो उसने इलाज के लिए शाही हकीम व वैद्य को बुलवाया, जो कई दिनों बाद उड़ीसा पहुंचे। वॉन टवीस्ट के उल्लेख से ज्ञात होता है कि गाँवों में जादू–टोनों के द्वारा बीमारियों के इलाज का प्रयास किया जाता था। जब सन् 1630–31 व 1695 में गुजरात, सिंध व दिल्ली सूबे में महामारी फैली तो ईलाज के अभाव में हजारों की संख्या में जनहानि के उल्लेख मिलते हैं।

प्राकृतिक आपदाओं का निर्धन तबके के लोगों पर तो और भी भयावह प्रभाव पड़ता था। दिल्ली व आगरा में सन् 1560 व 1594–95 में अनावृष्टि के कारण मजदूर वर्ग की दशा दयनीय थी। इस समय के इतिहासकारों के उल्लेखों से ज्ञात होता है कि सम्राट अकबर ने सार्वजनिक कार्यों–सड़कों, सराय, शाही भवन व नहरों के निर्माण कार्यों का आरंभ कर लोगों को राहत प्रदान की। सम्राट औरंगजेब ने प्राकृतिक आपदा के समय सन् 1670 में व्यापारियों व बंजारों को निर्देश दे रखे थे कि खाद्यान्न की कालाबाजारी व कीमतों में वृद्धि न की जाए। सम्राट जहांगीर ने सन् 1618 में कश्मीर सूबे में अनावृष्टि के चलते वहाँ पर लंगर (मुफ्त भोजनालय) की व्यवस्था की। इसी प्रकार सन् 1595 में सम्राट अकबर ने दिल्ली, आगरा व लाहौर में हिन्दू व मुसलमानों के लिए अलग–अलग लंगर की व्यवस्था की। इस व्यवस्था का अनुसरण बाद के मुगल शासकों ने भी किया। मुगल शासकों के द्वारा प्राकृतिक आपदा के दौरान भू–राजस्व में छूट भी प्रदान की जाती थी। सम्राट शाहजहां ने सन् 1630–31 की आपदा के दौरान 70 लाख दाम की छूट प्रदान की। सियाहा वकाए से ज्ञात होता है कि सम्राट औरंगजेब ने अजमेर सूबे के कई क्षेत्रों को सन् 1667 व 1670 में भू–राजस्व में छूट प्रदान की। अक्सर मुगल शासकों की तरफ से बैल, बीज व हल के लिए अग्रिम ऋण दिया गया।

इस प्रकार मुगलकाल में प्राकृतिक आपदाएं जहाँ एक ओर राज्य के आर्थिक तन्त्र को कमजोर बनाने का प्रमुख कारण था, वहीं समाज पर इसके गंभीर दुष्प्रभाव पड़ते थे तथा ये लोगों में आपराधिक प्रवृत्ति को बढ़ाने में सहायक होते थे। साथ ही ऐसे अवसरों पर प्रशासनिक व्यवस्था में भ्रष्टाचार व रिश्वतखोरी में भी वृद्धि होती थी। इन परिस्थितियों पर नियन्त्रण करने का यद्यपि–मुगल शासकों का प्रयास रहता था। इसके लिए सरकारी राजस्व को माफ करना, उत्पादन वाले क्षेत्रों से खाद्यान्न पहुंचाना, खाद्यान्न की सरकारी दुकानें व मुफ्त भोजनालय प्रभावित क्षेत्रों में खोलने जैसे उपाय किए जाते थे। ऐसे उपाय स्थानीय राजाओं और जमींदारों द्वारा उठाए जाने के उदाहरण भी मिलते हैं। तथापि जो उपाय किए जाते थे। वे तत्कालीन हालातों में इतने प्रभावी या कारगर साबित नहीं हो पाते थे और खासकर युद्धों के

www.ignited.in

चलते प्राकृतिक आपदा की घटना की स्थिति में तो प्रभावित क्षेत्रों के लोगों को बड़ी तादाद में पलायन कर जाना पड़ता था व यूं उस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था लम्बे समय तक अस्त–व्यस्त हो जाती थी।

अन्त में कहा जा सकता है कि यद्यपि मुगल काल के दौरान प्राकृतिक आपदाओं की घटनाएं बारम्बार घटती थी, परन्तु भारतीय कृषि, उद्योग और व्यापार तंत्र इतना सशक्त था कि ऐसी आपदाएं तत्कालीन आर्थिक जीवन के मूलभूत ताने–बाने का बड़े स्तर पर प्रभावित करने या इससे छिन्न–भिन्न करने की स्थिति पैदा नहीं कर पाती थी। ऐसे विकट अवसर तत्कालीन आर्थिक जीवन के मात्र गुजरते दौर के रूप में ही अपना प्रभाव डाल पाते थे। आपदा की गंभीरता के अनुरूप थोड़े बहुत समय के बाद प्रभावित क्षेत्र का जीवन पुनः सामान्य हो जाता था।